पलाश वन के घुंघरु
मुक्ता

पलाश वन के घुंघरू

मुक्ता

'मातामही' अम्मा
को
जिनकी कहानियां सुनते-सुनते मैंने
कहानियां लिखना सीखा

आमुख

कहानी-संग्रह में भूमिका होना-न होना साहित्य के अध्येताओं के लिए महत्त्व का विषय हो सकता है परन्तु मेरे लिए पाठकों से अपनी बात कहने का यह एक ऐसा अवसर लगा जिसका लोभ मैं संवरण न कर पायी । यहां मैंने अपनी जिन्दगी के आन्दोलन से होकर जो कुछ देखा, भोगा, गुना, समझा–उसे कहानी के माध्यम से रखने की कोशिश की है । रचना में कितना यथार्थ होना चाहिए यह तो मैं नहीं जानती किन्तु इतना अवश्य है कि साहित्य यथार्थ को ही प्रतिबिम्बित करता है । समय के अन्तराल में अनुभूति अन्य प्रकार के सम्भावनापरक अनुभवों से ऊर्जस्वल होती है और तब उसके अन्दर से उमड़ते हुए शब्द कला की व्यंजना बनते हैं । कला की ऊर्जा से यथार्थ का प्राण अभिव्यक्ति पाता है । कला के साथ यथार्थ का यही संवेदनात्मक रिश्ता है जो मीमांसा में आलोचनात्मक रिश्ता बनता है । संकलित कहानियां कैसी हैं यह तो पाठक ही बता सकता है किन्तु अपनी बात कहूं तो यही कह सकती हूं कि 'निज कवित्त केहि लागि न नीका' । हां, इतना आश्वासन अवश्य दे सकती हूं कि इन कहानियों के लिखने के बाद मुझे ऐसा लगा कि जिन्दगी के कुछ ऐसे क्षण जो मैंने जिए, आज पराए होकर मेरे अधिक अपने हो गये ।

यह मेरा पहला संग्रह है । इसके पीछे न जाने कितने वरेण्य, शुभेच्छु, छोटे-बड़े, यार-दोस्त और बाकी जो इन संबोधनों में न समेटे जा सकें, सभी की प्रेरणा, उत्साह, पुचकार, झटकार आदि का ही मैं इसे परिणाम मानती हूं ।

मुक्ता

क्रम

मेरा गुल मोहम्मद ऐसा नहीं हो सकता	11
एक और जबाला	25
एक यायावर	31
मुक्त शिशु	43
जिजीविषा	50
भैरव बाबा की सवरी	55
एक पहचान का जन्म	61
कौन ठगवा नगरिया लूटन हो	68
मिस साहिबा	75
अंतू	80
गंगा पुजइया	89
पलाश वन के घुंघरू	104

मेरा गुल मोहम्मद ऐसा नहीं हो सकता

'कश्मीर में सुरक्षा बलों ने अपने आतंकवाद निरोधी अभियान के दौरान दस लोगों को गिरफ्तार किया । इनमें प्रतिबन्धित जमात-ए-इस्लामी के चार बड़े नेता शामिल हैं ।

श्रीनगर के हजरतबल इलाके में कुख्यात आतंकवादी गुल मोहम्मद सुरक्षा बल के जवानों द्वारा मुठभेड़ में मारा गया ।'

मैं चौंक उठती हूं । अखबार मेरे हाथ से छूट जाता है ।

"मां-मां, तुम्हारी चिट्ठी एक अंकल देकर गये थे ।"

मैं पत्र खोलती हूं । मेरी आंखें कुछ पंक्तियों से फिसलती हुई आगे बढ़ जाती हैं ।

मैंने दरवाजा खोला । वह दरवाजा न था, एक चीख थी जो कई दिनों से गुमसुम जकड़ी हुई थी और इस समय मुंह से बेहताशा निकली जा रही थी । मैंने भागने के लिए कदम आगे बढ़ाया, ठंडे लोहे का सर्द चीरा मेरी पसलियों में घुस गया, वे संगीनें थीं । मेरे कदम जम गये । मैं सामने देख रहा था एक लाश, बिलकुल दरवाजे के सामने, गली के बीचोंबीच । कभी वह भी हंसती थी, रोती थी, गुस्से से बौखलाती थी, एक लड़की की मुहब्बत में इस हद तक गिरफ्तार थी कि भूल बैठी थी सियासी झमेले उठने पर हर खून का रंग लाल नहीं रह जाता । लेकिन आज वह एक बेजान, ठंडी लाश थी । मैं गिड़गिड़ाया, उन लोगों के आगे मिन्नतें कीं । संगीन की नोक पर एक नजर देखने की इजाजत मिली । मैं लाश के मुंह पर झुका । मेरे गर्म होंठों ने बर्फीले माथे को चूमा । मैं चाहता था